श्री लक्ष्मीधर-विद्यामन्दिर
२५६४
CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri
देवप्रयाग (... हिमालय)
व्यवस्थापक-पं. ... जोशी

२८२३

शिवमहिम्नः स्तोत्रम् ।

सान्वयभाषाटीकासमलंकृतम् ।

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृ-
शीस्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्व-
यि गिरः । अथावाच्यः सर्वः स्वम-
तिपरिणामावधि गृणन् ममाप्येषः
स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥ १ ॥

हे हर ! ते महिम्नः परं पारम् अविदुषः स्तुतिर्य-
दि असदृशी स्यात्तदा त्वयि ब्रह्मादीनामपि गिरः

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अवसन्ना 'भवेयुः' इत्यध्याहारः । अथ स्वमतिपरिणा-
मावधि गृणन् सर्वः अवाच्यः तर्हि हे हर ! ममाप्ये-
षः स्तोत्र परिकरः निरपवादः स्यादित्य वयः ॥ १ ॥

हे हर (भक्तपीडा हरनेवाले शिवजी) ! आपकी महिमाके पर पारको कुछ भी न जानते ऐसे अज्ञानीकरके की गई स्तुति जो आपके असमान नाम अयोग्य हो, तो ब्रह्मादिकोंकि भी जो वाणी नाम की हुई स्तुतियें है वे निष्फल हो जावेंगी. इससे हमारा अधिकार न होगा तो ब्रह्मादिकोंकाभी न होगा. क्योंकि, संपूर्ण महिमाको न तो हम और न वे ब्रह्मादिक जानते हैं. पर तबभी यह सर्व जन निजमतिका जो परिणाम (परिपाक) सोही अवधि अर्थात्-जहांतक बुद्धीबल पहुंचे तहांतक कहताही है; इससे वह (आपकरके) अवाच्य अर्थात् अनुग्रह करने योग्यही है अथवा अनिन्द्यही है. सो जो ऐसा है तो मेराभी इस स्तोत्रमें यह परिकर नाम प्रारंभ 'निरपवाद (दोषरहित)' हो यह प्रथम प्रार्थना है?

इस स्तोत्रमें शिखरिणी छन्द है, उसका लक्षण यह है— 'रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनस भला गः शिखरिणी.' अर्थात जहां रस नाम छः और रुद्र नाम ग्यारहपर विराम, (स्थिति) हो और य, म, न, स, भ ये गण और लघु, गुरु हों उसे शिखरिणी कहते हैं.

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अतीतः पंथानं तव च महिमा वाङ्-मनसयोरतद्व्यावृत्त्या यं चकितम-भिधत्ते श्रुतिरपि । स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः पदे त्ववर्वा-चीने पतति नमनः कस्य न वच ॥२॥

हे भगवन् ! यतस्तव महिमा वाङ्मनसयो पन्था-नम् अतीतः ! यं श्रुतिरपि चकितम् अभिधत्ते । कया अतद्व्यावृत्त्या । स इत्थंभूतमहिमा त्वं कस्य स्तोतव्यः, कतिविधगुणः, कस्य विषयः । अपि तु न । अर्वाचीने पदे तु कस्य मनो न पतति, कस्य वचो न पततीत्यन्वयः ॥ २ ॥

हे भगवन् ! आपकी महिमा, वाणी और मनसे परे है. जिसको वेद भी चकित अर्थात्—डरता हुआसा बताता है; सो अतद्व्यावृत्तिकरके, जो तत् नहीं सो अतत् ऐसी जो व्या-वृत्ति अर्थात्—निषेधरूप अनुमान उससे आपकी महिमाको वेद जानता है. सो ऐसे महिमावाले आप किससे स्तुति किये

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

जाओ और कौन जाने आपमें कितने गुण हैं और आप किसकरके ग्राह्य हो. पर आपके इस स्थितिप्रलयकारी विषयमें किसका मन वा किसकी वाणी न पडे ? अर्थात्--आपके गुणोंको सबही कहा चाहते हैं, उसीसे मैंभी यथामति कुछ प्रार्थना करता हूँ ॥ २ ॥

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवतस्तव ब्रह्मन्किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् । मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥ ३ ॥

हे ब्रम्हन् ! परमममृतं मधुस्फीता वाचो निर्मितवतस्तव सुरगुरोरपि वाक् किं विस्मयपदं न भवति । अपि तु भवत्येव । तर्हि किमर्थं स्तौषीत्यत आह । हे पुरमथन ! अहम् भवतः गुणकथनपुण्येन एतां मदियां वाणीं पुनामीत्यर्थे मम मतिस्तु व्यवसितेति ॥ ३ ॥

हे भगवन ! परम अमृतरूप मधुसमान मिष्ट अर्थात् कोमल वेदरूप वाणी रचनेवाले आपको ब्रह्माजीकीभी वाणी

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

क्या आश्चर्य है ? अर्थात्--आपके आगे ब्रह्माजीकी भी वाणी तुच्छ है। ऐसा है तो फिर तू क्यों स्तुति करता है ? इसपर कहते हैं कि, हे त्रिपुरासुरको मथनेवाले शिवजी ! मैं तो आपके पवित्रकारक इन गुणोंके कथनसे निजवाणीको पवित्र करता हूं इस अर्थही मेरी मति निश्चित हुई है ॥ ३ ॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृ-
त्त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु । अभव्यानामस्मिन्वरदरमणीयामरमणीं विहंतुं व्याक्रोशीं विदधतइहैके जडधियः ॥ ४ ॥

हे वरद ! यज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत तव ऐश्वर्यं तत गुणभिन्नासु तिसृषु तनुषु व्यस्तम्। कथंभूतं तत त्रयीवस्तु ।। किं च हे भगवन् ! एके जडधियस्तं विहंतुं व्याक्रोशीं विदधत इत्यन्वयः । कथं भूताम् अभव्यानां रमणीयाम् अस्मिन् अरमणीम् ॥ ४ ॥

हे वर देनेवाले शिवजी ! जो जगतकी उत्पत्ति, रक्षा तथा प्रलय करनेवाला आपका ऐश्वर्य है वह गुणोंसे भेदको प्राप्त ब्रह्मा,

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

विष्णु शिव इन तीन देहोंमें माना गया है, वस्तुसे तो आप एकही हो ! ' कैसा है ऐश्वर्य ' जो वेदत्रयीमें साररूप है और हे भगवन् ! कई मीमांसकादिक आपके उस ऐश्वर्यको न सहतेहुए आपकी निंदा करते हैं. कैसी जो अभव्य पापियों करके रमणीय और आपके इस ऐश्वर्यमें रमण न कर सके ऐसी झूठी निंदा करते हैं ॥ ४ ॥

किमीहः किंकायः स खलु किमुपाय स्त्रिभुवनं । किमाधारो धाता सृजतिकि मुपादान इति च । अतर्क्यैश्वर्ये त्व-य्यनवसरदुःस्थो हतधियः । कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयतिमोहायजगतः ॥ ५ ॥

खलु विधाता त्रिभुवनं किमीहः सन् सृजति । तथा किमाधारः किमुपादान इति एके हतधियः संदेहं कुर्वंति । तदयं कुतर्कः कांश्चिज्जडधियः मुखरयति । किमर्थं जगतो मोहाय । कथंभूतःकुतर्कः? अतर्क्यैश्वर्ये त्वयि अनवसरदुःस्थ इति ॥ ५ ॥

-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGang

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

निश्चयहि कर्ता ईश्वर जगत्को रचता है सो किस चेष्टासे रचता है ? तथा क्या आधार वा उसके पास क्या सामग्री वा उपाय है ? हे भगवन् ! ऐसा जो कुतर्क है वह उन एं-द्मतिवालोंहीको वाचाल बनाता है. किस प्रयोजनके लिये कि जगत्के मोह अज्ञानके लिये । कैसा कुतर्क, जो अतर्क-नीय ऐश्वर्यवाले आपमें अवसरको नहीं प्राप्त अर्थात्--स्थित नहीं हो सकता अतएव दुःस्थ अर्थात् तुच्छ है ॥ ५ ॥

अजन्मानो लोकाः किमवयववंतोऽपि जगतामधिष्ठातारं किं भवविधिरना-दृत्य भवति । अनीशो वाकुर्याद्भुव-नजनने कः परिकरो यतो मंदास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥ ६ ॥

इमे अवयववंतो लोकाः किम् अजन्मानः । भव-विधिः किम् अधिष्ठातारं त्वाम् अनादृत्य भवति । स अनीशश्चेत्कथं किं कुर्यात् । तस्य भुवनजनने कः परिकर इति मन्दास्त्वां प्रति संशेरते । हे अमरवर ! मम तु भवद्विषये न कोऽपि संशय इत्यन्वयः ॥ ६ ॥

२

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ये अवयवोंवाले अर्थात्—शरीरधारी लोक क्या नहीं जन्मवाले अर्थात्–अनुत्पन्न हैं ? और जगत्की रचना क्या रचनेवाले आपका निरादर करके होती है ? और वह विधाता समर्थ नहीं होगा तो कैसे क्या करेगा ? और जगत्के रचनेमें उसके पास क्या सामग्री है ? ऐसे मंदमतिवाले आपमें संदेह करते हैं, सो झूंठा है, और हे अमरवर ! मुझको तो आपविषे कुछ संशयही नहीं है ॥ ६ ॥

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च । रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥ ७ ॥

हे भगवन् ! त्रयी, सांख्यम्, योगः, पशुपतिमतम्, वैष्णवम् इति एवं प्रस्थाने प्रभिन्ने सति इदं परम् अदः पथ्यम् इतिरुचीनां वैचित्र्यात् ऋजुकुटिलनानापथजुषां नृणाम्, पयसामर्णव इव त्वाम् एक एव गम्योऽसीत्यन्वयः ॥ ७ ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हे भगवन् ! वेदत्रयी और सांख्य, योग और शैवमत, वैष्णवमत । मतशब्दसे यहां सिद्धांत जानने । सो सोमासिद्धांत शिवसिद्धांत इत्यादि । ऐसे ऐसे पृथक् पृथक् हुए मार्गोंमें यह परम श्रेष्ठ और हितकारी है ऐसे ऐसे सीधे टेढे मार्गोंमे प्रवृत्त हो रहे मनुष्योंको परिणाममें एक आपही प्राप्त होते हो. जैसे सब नदी नाले सिधे टेढे होके फिर समुद्रमें ही जाकर गिरते हैं ॥ ७ ॥

महोक्षः खट्वांगं परशुरजिनं भस्मफणिनः कपालं चेतीयत्तववरदतंत्रोपकरणम् । सुरास्तां तामृद्धिं विदधति भवद्भ्रूप्रणिहितां नहि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥ ८ ॥

हे भगवन् ! महोक्षः, खट्वाङ्गम्, परशुः, अजिनम्, भस्म, फणिनः, कपालं च इति इयत्तव तन्त्रोपकरणमस्ति । परं च हे वरद ! सुराः तां तामृद्धिं भवद्भ्रूप्रणिहितामेव विदधाति । किं तदित्यत आह स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा न भ्रमयतीति ॥ ८ ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हे भगवन्! बडा बैल, खाटके एक पाय समेत दंडा, और परशु (कुल्हाडा) और अजिन गजचर्म, तैसेही भस्म और मनुष्यकी खोपरी, नाग, यह तो आपकी उपकरणसामग्री है। परंतु देवता सब आपहीकी भृगुटीसे निहित अर्थात् सीधी दृष्टीसे दी हुई उस उस संपदाको भोगते हैं 'तो फिर आप क्यों नहीं भोगते सो कहो' आत्माराम (योगी) जानोंको विषयरूप मृग तृष्णा भ्रमाती नहीं है ॥ ८ ॥

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदतिव्यस्त-
विषये। समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन
तैर्विस्मित इव स्तुवञ्जिहेमि त्वां न खलु
ननु धृष्टा मुखरता ॥ ९ ॥

हे भगवन्! कश्चित् इदं सर्व जगत् ध्रुवं वदति कश्चिच्च अध्रुवं गदति। परः ध्रौव्याध्रौव्ये गदति। इति एतस्मिन् व्यस्तविषये समस्ते जगति तैर्विस्मित इव त्वां स्तुवन् जिहेमि। खलु मुखरता धृष्टा न। सा धार्ष्ट्यंतः प्रत्यतीति ॥ ९ ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हे शिवजी ! कोई तो इस सब जगत्को नित्य कहता है और कोई अनित्य कहता है; वैसेही कोई नित्य अनित्य भी कहता है। ऐसे इस उलटे विषयवाले सब जगत्में उन अनेक मतवादियों करके विस्मित हुआसा मैं आपकी स्तुति करता हुआ लज्जाको प्राप्त होता हूं, तथापि यह वाचालता दाढसमे मुझको प्रेरणा करती है ॥ ९ ॥

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिंचो हरिरधः परिच्छेत्तुंयातावनलमनलस्कंधवपुषः । ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्स्वयं तस्थेताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥ १० ॥

हे भगवन् ! यत उपरि विरिञ्चः, अधः हरिः, इमौ तवैश्वर्यं यत्नात्परिच्छेत्तुम् अनलं यातौ । कथंभूतस्य तव । अनलस्कन्धवपुषः । ततो हे गिरिश ! भक्तिश्रद्धाभरगुरु गृणद्भ्यां ताभ्यां भवता स्वयं तस्थे । यतस्तवानुवृत्तिः किं न फलति अपि तु फलत्येवेत्यन्वयः ॥ १० ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हे शिवजी जिस आपके ऐश्वर्यको ऐसाही है ऐसे जाननेके लिये ऊपरको ब्रह्मा और नीचे विष्णुजी गये थे सो वे असमर्थ हुए। कैसे आप, तेजोमयशरीर। फिर हे शिवजी! भक्तिश्रद्धाकरके स्तुति करते ऐसे उन दिनोंके अर्थ आपही प्रत्यक्ष दर्शन देते हुए, सो आपकी सेवा क्या नहीं फलती है? अर्थात्-फलतीही है ॥ १० ॥

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकंडूपरवशान्। शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणांभोरुहबलेः स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥ ११ ॥

हे त्रिपुरहर! यत् दशास्यः अवैरव्यतिकरं त्रिभुवनम् अयत्नादापाद्य, बाहून् अभृत। कथंभूतान् रणकण्डूपरवशान्। तदिदं स्थिरायास्त्वद्भक्तेर्विस्फूर्जितमिति। किंभूताया भक्तेः। शिरः पद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेरित्यन्वयः ॥ ११ ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हे त्रिपुरहर शिवजी ! जो दशमुख रावण, नहीं वैरियों का व्यतिकर व्यामिश्रण अर्थात्—उपद्रव जिसमें ऐसे त्रिभुवनको मिलाकर भुजोंको धारण करता हुआ, कैसे भुज ? जो रणकी खाजसे परवश अर्थात्—संग्राम चाहते, सो यह आपकी अचलभक्तिका एक विशेष स्फूर्जित (विलासमात्र) है। कैसी भक्ति कि, अपने मस्तकोंकि पंक्तिसे चरणकमलोंकी भेट करी है जिसमें अर्थात्-मस्तक काटकर चढा दिये ॥ ११ ॥

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः । अलभ्या पातालेऽप्यलसचलितांगुष्ठशिरसि प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥ १२ ॥

हे भगवन् ! त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं बलात्त्वदधिवसतौ कैलासेऽपि विक्रमयतः अमुष्य अलसचलितांगुष्ठशिरसि त्वयि सति पातालेऽपि प्रतिष्ठा अलभ्या आसीत । यतः उपचितः खलः ध्रुवं मुह्यत्येवेति ॥ १२ ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हे भगवन् ! जो आपके रहनेके इस कैलासमें भी विक्रम कर रहा, अर्थात्-निजभुजबलको तौल रहा ऐसे इस रावणकी पाताळमें भी प्रतिष्ठा अलभ्य हुई अर्थात्--इसकी निंदा हुई. कैसा है भुजवन (भुजसमुदाय) कि आपकी सेवासे ही अधिगत (प्राप्त) है सार (बल) जिसमें, सो क्या होनेसे कि अलस (सहज) हीसे चलाये पैरके अँगूठेसे. तात्पर्य यह कि, कैलासके उखाडनेको उसकी जडमें इसने हाथ दे दिया. जब पर्वत हिलने लगा तब आपने निजपैरका अँगूठा हिला दिला तब उसकी भुजा वहां दबगई. वह निर्बल होगया और जितने लोक पाताळमें थे वे सब हंसने लगे. ऐसे उस रावणकी शोभा बिगड गई सो ठीक है क्योंकि, समृद्ध हुआ खोटा जन अवश्य मोहको प्राप्त हो जाता है; इसमें संदेह नहीं है ॥ १२ ॥

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सतीमधश्चक्रे बाणः परिजनविधेय-त्रिभुवनः । न तच्चित्रं तस्मिन्वरिव-सितरि त्वच्चरणयोर्न कस्याप्युन्नत्यैव भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥ १३ ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हे भगवन् ! यद्बाणासुरः सुत्राम्णः परमामुच्चैरपि सतीमृद्धिम् अधः चक्रे । कथं भूतः । परिजनविधेयात्रिभुवनः ॥ तत्तस्मिंश्चित्रं न । कथं भूते तस्मिन् । त्वच्चरणयोर्वरिवसितरि । यतः हे वरद ! त्वयि शिरसः अवनतिः कस्यापि उन्नत्यै न भवति । अपि तु सर्वस्यापि भवत्येवेत्यन्वयः ॥ १३ ॥

हे शिवजी ! जो बाणासुर, सुत्रामा जो इन्द्र उनकी अत्यंत बढी हुई भी समृद्धिको नीची करता हुआ; कैसा वह कि, परिजनविधानयोग्य अर्थात् निजाधीन है त्रिभुवन जिसके, सो उसमें आश्चर्य नहीं, क्योंकि वह आपके चरणोंमें रत रहता था, आपके चरणोंपर शिर नमाना किसकी उन्नति (बढती) के लिये नहीं होता है ? अर्थात्—सबहीको बढाता है ॥ १३ ॥

अकांडब्रह्मांडक्षयचकितदेवासुरकृपा वि-
धेयस्यासीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः ।
स कल्माषः कंठे तव न कुरुते न श्रि-

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

यमहो विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभं-
गव्यसनिनः ॥ १४ ॥

हे त्रिनयन ! अकांडब्रम्हाण्डक्षयचकितदेवासुर-कृपाविधेयस्य विषं संहृतवतः तव कंठे यः कल्माषः सः श्रियं न कुरुते एवं न, अपि तु कुरुत एवेति । 'अहो युक्तमेतत' इत्याह–भुवनभयभङ्गव्यसनिनः विकारोऽपि श्लाघ्य एवेत्यन्वयः ॥ १४ ॥

हे तीन नयनोंवाले शिवजी ! समस्त ब्रह्मांडके क्षय होनेसे चकित देवता और असुरोंपर कृपा करनेवाले ऐसे आप हालाहल विषको प्राशन कर गये उससे आपके कंठमें जो कालापन है सो ठीक है, क्योंकि त्रिभुवनके भंग होनेके भयसे दुःखित अर्थात्—चिंता करते आपके कंठमें वह कालापन श्लाघनीय (सराहने योग्य) है "तभीसे आप नीलकंठ कहाये हो" ॥१४॥

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तंते नित्यं जगति जयिनो यस्य

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

विशिखाः॥ स पश्यन्नीशत्वामितरसुरसा-
धारणमभूत् स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि
वशिषु पथ्यः परिभवः ॥ १९ ॥

हे ईश ! जयिनः यस्य विशिखाः सदेवासुरनरे जगति क्वचिदपि असिद्धार्थाः न निवर्तंते । स स्मरः त्वाम् इतरसुरसाधारणं पश्यन् स्मर्तव्यात्मा अभूत । यतः वशिषु परिभवः पथ्यो न भवतीत्यन्वयः ॥१९॥

हे ईश्वर ! सब जगत्को जीतनेवाले जिस कामदेवके बाण इस देव असुर मनुष्योंसहित सब संसारभरमें कहीं भी प्रयोजन सिद्ध किये विना नहीं लौटते, अर्थात्—खाली नहीं जाते; ऐसा वह कामदेव आपको और देवताओंके समान देखता हुआ स्मरणीय आत्मा अर्थात्—भस्मसात् शेष होगया; क्योंकि वशी (जितेन्द्रिय) जनोंमें निरादर करना अच्छा नहीं होता ॥ १९ ॥

मही पादाघाताद्व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहग-

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

णम् । मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥ १६ ॥

हे भगवन् ! त्वं जगद्रक्षायै नटसि इति वामा एव विभुतास्ति । कुतः पादाघातात् सहसा महीसंशयपदं याति । किंच भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणं विष्णोः पदं भवति । अथ च अनिभृतजटाताडित तटा द्यौः मुहुः दौस्थ्यं यातीति ॥ १६ ॥

हे शिवजी ! आप जगत्की रक्षाके लिये नाचते हो यह आपकी उलटीही ईश्वरता है; क्योंकि, पैर चलानेसे तो शीघ्रही पृथ्वी संदेह करती है. समुद्रमें न धस जाऊं और आपकी भ्रमण करती परिघसरीखी भुजाओंसे गडबडाते तारागणों वाला आकाश दुःखी होता है, और चंचल जटाओंकरके ताडित स्वर्ग, बारबार दुःखित होता है अर्थात्—थक जाता है, (सो आश्चर्य नहीं, जो राजाकी सवारी निकलनेसे किसी कूंजडेका टोकरा गिर पडा तो क्या है ?) ॥ १६ ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः प्रवाहो वारां यः पृषतलघु दृष्टः शिरसि ते। जगत् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमित्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥ १७ ॥

हे भगवन् ! यः वियद्व्यापी, तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः वारां प्रवाहः स ते शिरसि पृषतलघु दृष्टः। किं च तेन द्वीपाकारं जलधिवलयं जगत्कृतम् इत्यनेनैव धृतमहिम दिव्यं तव वपुरुन्नेयमिति ॥१७॥

हे शिवजी ! जो जलका प्रवाह, आकाशसा व्याप्त और तारागणोंसे (तुल्य) गिनी फेन उठनेकी कांति जिसकी, सो आपके शिरमें बिंदुसरीखा छोटा देखपड़ा और उसी करके यह जगत् टापूसरीखा समुद्रोंसे घिरा किया गया तो इसीसे दिव्य महिमाधारी आपका शरीर उन्नमन करना अर्थात्—अत्यंत उत्कृष्ट जान लेना चाहिये ॥ १७ ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

रथः क्षोणी यंता शतधृतिरगेंद्रो धनुरथो
रथांगे चंद्राकौ रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडंबरवि-
धिर्विधेयैः क्रीडंत्यो न खलु परतंत्राः
प्रभुधियः ॥ १८ ॥

हे भगवन् ! त्रिपुरतृणं दिधक्षोस्ते कोऽयमाडम्ब-रविधिः । यतः क्षोणी रथः, शतधृतिः यंता, अगेंद्रो धनुः, अथो रथांगे चंद्राकौ, किंच रथचरणपाणिः शर इति । अहो युक्तमित्याह । विधेयैः सह क्रीडन्त्यः प्रभुधियः खलु परतन्त्रा न भवन्ति ॥ १८ ॥

हे शिवजी ! तृणके समान त्रिपुरासुरको जलाना चाहते आपको यह आडंबरविधान अर्थात्—भारी बखेडा क्या रचना था ! जो पृथ्वीरूप तो रथ, और शतधृति (ब्रह्मा) सारथी, वैसेही गिरिराज धनुष, और सूर्य चन्द्रमा रथके पहिए (चक्र) बनाये, और रथ चक्रहस्त (विष्णु) को बाण बनाया सो ठीक है; क्योंकि, भक्तोंके साथ क्रीडा करती जो समर्थोंकी बुद्धियें हैं, वे निश्चितही पराधीन नहीं होती हैं ॥ १८ ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्र-
वपुषा त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति
जगताम् ॥ १९ ॥

हे भगवन्! हरिस्ते पादयोः साहस्रं कमलबलिम् आधाय त्वां पूजितवान्। अथ यत्तस्मिन् एकोने सति निजं नेत्रकमलम् उदहरत । ततो भक्त्युद्रेकः परिणतिं गतः सन् असौ त्रयाणां जगतां रक्षायै जागर्ति 'केन' चक्रवपुषेति ॥ १९ ॥

हे शिवजी! श्रीविष्णुजी आपके चरणोंमें हजार कमलोंकी भेट रखकर पूजा करते थे, तो उनमें एक कमल घट गया, तब उन्होंने निजनेत्ररूप कमल उखाडके आपके पैरोंपर चढा दिया. फिर वही भक्तिका बढाव परिणामको प्राप्त हो सुदर्शनचक्र हुआ तीनों भुवनोंकी रक्षाके लिये जाग रहा है, सो आपका अनुग्रह है ॥ १९ ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते । अतस्त्वां संप्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥ २० ॥

हे भगवान्! क्रतौ सुप्ते सति क्रतुमतां फलयोगे त्वमेव जाग्रदसि । यतः प्रध्वस्तं कर्म पुरुषाराधनमृते क्व फलति ? न क्वापीति । अतः क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं त्वां संप्रेक्ष्य अयं जनः श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा कर्मसु दृढपरिकरोऽस्तीति ॥ २० ॥

हे शिवजी ! यज्ञके सोते अर्थात्—समाप्त होनेपर फिर यज्ञवालोंके फलयोग अर्थात्—संपूर्ण फल देनेमें आपही जाग रहे हो; नहीं तो नष्ट कर्म (यज्ञ) पुरुषके आराधन विना कैसे सिद्ध हो ? इसमें आपको यज्ञफल देनेके प्रतिभू (जामिन) समझके यह जनसमूह, कर्मोंमें व वेदोंमें श्रद्धा रखकर कटी कमर बांध रहा है, (मुख्यफलदाता आपही हो) ॥ २० ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृतामृषीणामार्त्विज्यंशरणदसदस्याः सुरगणाः । क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥ २१ ॥

हे शरणद ! क्रियादक्षः तनुभृताम् अधीशः दक्षः क्रतुपतिः आसीत । किंच ऋषीणां आर्त्विज्यम् । तथा यस्य सुरगणाः सदस्याः । अथैवंभूतस्य दक्षस्य क्रतुफलविधानव्यसनिनस्त्वत्तः क्रतुभ्रंशो जातः। यतः कर्तुः मखाः श्रद्धाविधुरम् अभिचाराय भवंति ॥२१॥

हे शरणदाता शिवजी ! जो दक्षप्रजापति, क्रियाओंमें कुशल और शरीरधारी जीवोंका अधिपति यज्ञपति कहा जाता है, जिस दक्षके यज्ञमें ऋषि, ऋत्विक् , (यज्ञके आचार्य) और देवता सदस्य (प्रयोग जाननेवाले सभापति) हुए ऐसे उसका यज्ञ, यज्ञफल देनेकी चिंतावाले अर्थात्—फलसंपूर्ण कर्ता आपसे नाश किया गया सो ठीक है. अवश्यही श्रद्धासे रहित करने-

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

वाले यज्ञ उलटे फलके अर्थ अर्थात्—कुत्सितफलदाता होते हैं ॥ २१ ॥

प्रजानाथं नाथप्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपिसपत्राकृतममुं
त्रसंतं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधर-
भसः ॥ २२ ॥

हे नाथ! ते मृगव्याधरभसः प्रभुं ब्रह्माणम्। अद्यापि दिवं यातमपि न त्यजति। कथं भूतस्य तव धनुष्पाणेः। कथं भूतं ब्रह्माणम्। प्रसभं रोहिद्भूतां स्वां दुहितरम् ऋष्यस्य वपुषा रिरमयिषुम्। पुनः कथं भूतं ब्रह्माणं, सपत्राकृतम्। पुनः कथं भूतम् अभिकमिति ॥ २२ ॥

हे शिवजी! आपका जो शिकार खेलना है, वह डरते हुए ब्रह्माको स्वर्गमें गये हुएको भी अबतक नहीं छोडता है. कैसा ब्रह्मा, जो हठसे विषय करता उसे डरी हिरनी निजपुत्रीसे हिरन

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

होकर रमण करना चाहता, और कैसा ब्रह्मा जो आपके बाणसे डर रहा, तथा कामके वश हो रहा ॥ २२ ॥

स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमण्हाय तृणत-
त्पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्धघटनाद-
वैतित्वामद्धाबत वरद मुग्धा युवतयः २३

हे पुरमथन ! देवी, पुष्पायुधम् अह्नाय तृणवत पुरः प्लुष्टम् अद्धा दृष्ट्वापि त्वां स्त्रैणम् अवैति ! कथंभूता देवी, स्वलावण्याशंसा । कथंभूतं कंदर्पं, धृतधनुषम् । कस्मात यमनिरतदेहार्धघटनात । बत हे वरद ! युवतयः मुग्धा भवन्तीत्यन्वयः ॥ २३ ॥

हे त्रिपुरको मथनेवाले शिवजी ! देवी पार्वतीजी, पुष्प अस्त्रवाले कामदेवको अपने तृणके समान तुरत जलाय भस्म किया भी साक्षात् देखके, फिर भी आपको स्त्रैण अर्थात् अपने आधीन जानती हैं यह हैं खेदकी बात है ? कैसा है वह देवी ? अपनी सुंदरताकी आशंसा कथन करती । कैसा वह काम? धनुष धारण कर-

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नेवाला. किस हेतुसे, निरंतर अपने आधे अंगमें अपनेको रखनेसे सो हे वर देनेवाले शिवजी! स्त्रियें तो मूढ रहती ही हैं ॥ २३॥

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराश्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः । अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मंगलमसि ॥ २४ ॥

हे स्मरहर! तव श्मशानेषु आक्रीडा, पिशाचाः सहचराः, चिताभस्मालेपः, स्रक् अपि नृकरोटीपरिकरः एवं तव अखिलं अमंगल्यं शीलं भवतु नाम। परं तथापि स्मर्तॄणां हे वरद! त्वं परमं मंगलम् असि इत्यन्वयः ॥ २४ ॥

हे कामहंता शिवजी! श्मशानमें तो आपका रहना, और पिशाच भूतप्रेतादिक ये आपके सहचारी, और चिताकी भस्मका लेपन, और माला भी मनुष्यमस्तकोंकी बनी, ऐसे आपका जो वेष तथा सामुग्री है सो अमंगल है; सो

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हो, पर स्मरण करनेवालोंके तो आप परम मंगलदाता हो आप हीकी विभूति सर्वत्र है ॥ २४ ॥

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्संगितदृशः । यदालोक्याल्हादं ह्रदइव निमज्ज्यामृतमये मधत्यंतस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ॥ २५ ॥

हे भगवन् ! यमिनः अन्तः प्रत्यक्चित्ते सविधं मनः अवधाय । किमपि तत्त्वम् आलोक्य आल्हादं दधाति । कथंभूतास्ते, आत्तमरुतः । पुनः कथंभूताः प्रहृष्यद्रोमाणः । अपरं किंभूताः, प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः । किंच ते अमृतमये ह्रदे निमज्ज्य इवयत आनन्दम् प्राप्नुवन्ति किल तत्त्वं त्वमेवासीती ।२५।

हे भगवन् ! यमानियमवाले योगीजन, विषयोंसे निवृत्त ऐसे अंतःकरणमें विधिसहित निजमनको धारण करके और कुछ भी तत्त्वको देखके (मनमें निश्चय करके) आनंदको धारण

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

करते हैं। कैसे हैं वे आत्त (ग्रहण) किया है पवन जिन्होंने अर्थात्‌-प्राण रोंके। फिर कैसे हैं कि प्रकर्षसे हर्षित हैं रोम जिनके अर्थात्‌-रोमांचित हुए। और० कै० हर्षसे आखोंमें आंसू भर आये हैं और वे अमृतके कुण्डमें बूडनेके जैसे जो आनंद पाते हैं सो तत्त्व (सारस्वतु) आपही हैं॥ २५॥

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमासि पवनस्त्वं हुतवह स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च। परिछिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं न विद्मस्तत्तत्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवासि॥ २६॥

हे भगवन्! त्वं अर्कः त्वं सोमः त्वं पवनः असि। हुतवहः त्वं आसि। किंच त्वं आपः, त्वं व्योमः उ इति वितर्के। धरणिः आत्मा च त्वमेवासि। हे देवाधिदेव! परिणताः एवं परिच्छिन्नां गिरं बिभ्रतु। पुनरिह वयं हि, तत्तत्वं न विद्मः यत्त्वं न भवासि इत्यन्वः॥ २६॥

हे शिवजी! तुमही सूर्य हो, तुमही चंद्र हो, तुमही वायु हो, तुमही अग्नि हो और तुमही जल हो, तुमही आकाश हो, तुमही

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

पृथ्वी हो, आत्मा साक्षी आपही हो । हे भगवन्! जो आपविषे परिणामको प्राप्त अर्थात्–आपके ज्ञानी भक्त हैं वे ऐसी इयत्ताव-धारित अलग अलग वाणी कहते हैं सो कहो, पर हम तो ऐसा कोई तत्त्व नहीं जानते जहां आप न हो ॥ २६ ॥

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरानकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिर भिदधत्तीर्णवि-कृति । तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुंधा-नमणुभिः समस्तव्यस्तं त्वां शरणपद गृणात्योमिति पदम् ॥ २७ ॥

हे शरणद ! ॐ इति पदं समस्तं व्यस्तं च त्वामेव गृणाति । किं कुर्वन् अकाराद्यैस्त्रिभिर्वर्णैः त्रयीं तिस्रो वृत्तीः, त्रिभुवनम् अथ त्रीन् सुरानपि दधत । कथं भूतं तत, तीर्णविकृति । पुनः कथंभूतम् अणुभिर्ध्व-निभिस्ते तुरीयं धाम अरुन्धानमित्यन्वयः ॥ २७ ॥

हे शरणदाता शिवजी ! समस्त ॐ यह पद और व्यस्त (अ, उ, म,) यह पद आपहीकी स्तुति करता है. क्या करता

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अ, उ, म इन तीन वर्णोंकरके वेदत्रयी ऋक्, यजुः, साम, इनको और तीन स्वर उदात्त, अनुदात्त, स्वरित इनको अथवा तीन अवस्था, जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति इनको और तीनों भुवनोंको और तीनों देवोंको धारण करता. कैसा वह (ॐ) पद, जो (तीर्णविकृति) तरी गई है विकृति जिसकरके अर्थात्—निर्विकार है. फिर कैसा, जो सूक्ष्म ध्वनियोंसे आपके तुरीय धाम चौथे पदको व्याप रहा है; सो हृदयसे कंठतक तो जाग्रत अवस्था, और कंठसे तालुतक स्वप्न, उससे ललाटतक सुषुप्ति अवस्था है, उससे परे ब्रह्मांडमें तुरीय अवस्था शिवतत्त्व है, उसे यह ओंकार बताता रहता है ॥ २७ ॥

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सह म-
हांस्तथा भीमेशानाविति यदभिधाना-
ष्टकमिदम्। अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति
देव श्रुतिरपि प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहि-
तनमस्योऽस्मि भवते ॥ २८ ॥

हे देव ! भवः १, शर्वः २, रुद्रः ३, पशुपतिः ४, अथ उग्रः ५, महादेवः ६, भीमः ७, ईशानः ८

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

इति यत् अभिधानाष्टकम् अमुष्मिन् प्रत्येकं श्रुतिरपि प्रविचरति इति हेतोः प्रियाय अस्मै धाम्ने भवते प्रणिहितनमस्यः अस्मि इत्यन्वयः ॥ २८ ॥

हे देव ! भव १, शर्व २, रुद्र ३, पशुपति ४, और उग्र ५, महादेव ६, वैसे भीम ७, ईशान ८; यह जो आपका नामाष्टक है इसमें प्रत्येकमें वेद भी विचरता, अर्थात्–उनको बताता है. ऐसे प्रिय धाम पूर्व श्लोकमें कहे, तेजोमय आपके अर्थ मैं नमस्कार करता हूं २८

नमो नेदिष्ठाय प्रियदवदविष्ठाय च नमो नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहरमहिष्ठाय च नमः। नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयनयविष्ठाय च नमो नमः सर्वस्मै ते तदिदमितिसर्वाय च नमः ॥ २९ ॥

हे प्रियदेव ! नेदिष्ठाय ते नमः । दविष्ठाय च ते नमः । क्षोदिष्ठाय ते नमः । हे स्मरहर ! महिष्ठाय

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

च ते नमः । वर्षिष्ठाय च ते नमः । हे त्रिनयन ! यविष्ठाय च ते नमः । सर्वस्मै च ते नमः । अति· सर्वाय च ते तत इदं नमः इत्यन्वयः ॥ २९ ॥

हे शिवजी ! अत्यंत निकट ऐसे आपको नमस्कार है. और हे वनवासी ! अतिदूरवर्ती आपको नमस्कार, अति सूक्ष्म आपको नमस्कार है, हे स्मरहर ! (कामहंता शिवजी) अत्यंत महिष्ठ (बडे) आपको नमस्कार है, और अतिवृद्ध आपको नमस्कार है, हे त्रिनेत्र (तीन आंखोंके) ! अतितरुण आपको नमस्कार और सर्वस्वरूप आपको नमस्कार और संपूर्णके उल्लंघन करनेवाले आपको यह मेरा नमस्कार हो ॥ २९ ॥

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः । जनसुखकृते सत्वोद्रिक्तौ मृडाय नमोनमः प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥ ३० ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हे भगवन् ! विश्वोत्पत्तौ बहलरजसे भवाय ते नमो नमः । तत्संहारे प्रबलतमसे हराय ते नमो नमः । सत्त्वोत्पत्तौ जनसुखकृते मृडाय ते नमो नमः । प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये च पदे शिवाय ते नमो नमः इत्यन्वयः ॥ ३० ॥

हे भगवन् ! विश्वकी उत्पत्तिनिमित्त अतिरजोगुणका रूप लियेहुए भव ऐसे आपको 'नमो नमः' अतिशयप्रेमसे नमस्कार है, और उस संसारके संहारनिमित्त अत्यंत तमोगुणी हररूप आपको नमस्कार, और सत्वगुणका काम जो जनोंका सुख उसके लिये मृड (सुखकारी) आपको नमस्कार, और उत्कृष्ट तेजके स्थान और तीनों गुणोंसे परे मुक्तिस्थानमें शिवरूप आपको नमस्कार है ॥ ३० ॥

कृशपरिणतिचेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं क्व च तव गुणसीमोल्लंघिनी शश्वदृद्धिः । इति चकितममंदीकृत्य मांभक्तिराधाद्वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥ ३१ ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हे भगवन् ! कृशपरिणति क्लेशवश्यं च इदं मे चेतः क । शश्वत गुणसीमोल्लंघिनी ते ऋद्धिश्च क । हे वरद ! इति चकितं मां ते चरणयोर्भक्तिः अमन्दीकृत्य वाक्यपुष्पोपहारमाधात् इत्यन्वयः ॥ ३१ ॥

हे वरदाता शिवजी ! कृश है परिणाम जिसका अर्थात् अत्यंत मंद और दुःखव्याप्त ऐसा यह मेरा चित्त कहां और गुणसीमाको उल्लंघनेवाली ऐसी आपकी महासमृद्धि कहां ? ऐसे चकित भये मुझको यह आपके चरणोंकी भक्ति अमंद कर अर्थात् सावधान बनाके वाक्यरूपी है पुष्प जिसमें ऐसी पूजाकी कल्पना करती हुई ॥ ३१ ॥

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिंधुपात्रे सुरतरुवरशाखालेखनीपत्र मुर्वी । लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सार्वकालंतदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥ ३२ ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हे ईश ! यदि असितगिरिसमं कज्जलं सिन्धुपात्रे स्यात् । सुरतरुवरशाखा यदि लेखनी स्यात् । पत्र- मुर्वी स्यात् । तद् गृहीत्वा शारदा सार्वकालं यदि लिखति तथापि तव गुणानां पारं न याति इत्य- न्वयः ॥ ३२ ॥

हे शिवजी ! जो कभी नीलगिरिके सम तो कज्जल (मषी) हो, सो समुद्रपात्रमें मिलाय भरा जावे और कल्पवृक्षकी सुंदर कलम हो. वैसेही पृथ्वी पत्र (कागज) हो । फिर साक्षात् सरस्वती आपके गुणोंको सदैव लिखती रहे, तबभी आपके गुणोंके पारको नहीं पावे, तब मैं तो क्याही कहूं ? ॥ ३२ ॥

असुरसुरमुनींद्रैरर्चितस्येंदुमौलेः । ग्र- थितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ॥
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदंताभिधानो । रु- चिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥ ३३ ॥

इमे 'असुरसुर०' इत्यादयो फलश्रुतिश्लोकाः सुगमा अतो नान्वयः कृतः ॥ ३३ ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सब असुर सुर तथा मुनिजनोंकरके पूजित, विख्यात महिमावाले ऐसे निर्गुण ईश्वर चंद्रशेखरजीके इस सुंदर स्तोत्रको बडे बडे शिखरिणी छंदोंसे सकलगुणश्रेष्ठ (पुष्पदंत) नाम गंधर्व करता हुआ ॥ ३३ ॥

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः । स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्रप्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च ॥ ३४ ॥

जो पुरुष इस अनवद्य सुंदरशिवजीके स्तोत्रको नित्य शुद्धमन हुआ परमभक्तिसे पढता रहे, वह शिवलोकमें शिवजीके समान कांतिमान होता है और इस लोकमें अत्यंत बहुत धन और आयुष्यवाला तथा पुत्रवाला और कीर्तिवाला होता है ॥ ३४ ॥

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ॥ महिम्नस्तव पाठस्य कलां नार्हंति षोडशीम् ॥ ३५ ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हे शिवजी ! मंत्रदीक्षा, दान, तप, तीर्थ और होम, यज्ञ आदि जितने पुण्यकर्म हैं वे आपके इस महिम्नस्तोत्रकी सोलहवीं भी कलाको प्राप्त होने योग्य नहीं हैं ॥ ३५ ॥

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गंधर्वभाषितम् ॥ अनुपम्यं मनोहारि शैवमीश्वरवर्णनम् ॥ ३६ ॥

यह (शिवमाहिम्न) स्तोत्र समाप्त हुआ, जो सब ईश्वरवर्णनात्मक, वैसे अनुपमेय, सुंदर और पवित्र पुष्पदंत गंधर्वने कहा गया ॥३६॥

महेशान्नापरोदेवोमाहिम्नोनापरास्तुतिः । अघोरान्नापरो मंत्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥ ३७ ॥

महादेवजीसे तो परे कोई देवता नहीं, महिम्नसे परे कोई स्तोत्र नहीं, अघोरसे परे मंत्र नहीं और गुरुसे परे कोई और परम तत्त्व नहीं है ॥ ३७ ॥

कुसुमदशननामा सर्वगंधर्वराजः । शिशुशशधरमौलेर्देवदेवस्य दासः॥स गुरुनिज

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

महिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात् । स्तवन-
मिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥३८॥

जो पुष्पदन्तनाम आचार्य, सब गंधर्वोंका राजा, देवोंसे अ-
धिक ऐसे बालशशिधारी देवोंके देव महादेवजीका भक्त था,
वह इंद्रके क्रोधसे (अपने) महिमासे भ्रष्ट हुआ अर्थात्
उनकी सेवामें कुछ भुल हुई; इसी रोषसे उनकी प्रसन्नताके लिये
यह दिव्योंमें दिव्य महिम्नस्तोत्र उसने (पुष्पदंतने) बनाया॥३८॥

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं । पठति
यदिमनुष्यः प्रांजलिर्नान्यचेता ॥ व्रज-
ति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः स्तव-
नमिदममोघं पुष्पदंतप्रणीतम् ॥ ३९ ॥

जो इस सुर मुनि आदिकोंसे पूजनीय ऐसा और निश्चित
फलदाता पुष्पदंतका बनाया और स्वर्ग मोक्षके मुख्य कारण
(महिम्न) स्तोत्रको अनन्यचित्त हुआ, अंजलि किये परमभ-
क्तिसे पढै वह किन्नरोंसे स्तुति किया. शिवजीके निकट जाय
विराजे ॥ ३९ ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्रीपुष्पदंतमुखपंकजनिर्गतेन । स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण ॥ कंठस्थितेन पठितेन समाहितेन । सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥ ४० ॥

इति श्रीपुष्पदन्ताचार्यविरचितं श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रं संपूर्णम् ॥ श्रीसांबसदाशिवार्पणमस्तु ॥ ॥

इस श्रीपुष्पदंताचार्यके मुखकमलसे निकले, पापहारि, शिवजीके प्यारे और सावधान हो कंठपाठ किये इस स्तोत्रसे सब प्राणियोंके पति महेश्वरजी प्रसन्न होते हैं ॥ ४० ॥

शरयुगनवचन्द्रे माधवे कृष्णपक्षे ।
गुरुशशिधरतिथ्यामीश्वरीदत्तसूनुः ॥
सकलजनलघिष्ठो देविदत्ताभिधानो ।

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

रुचिरमनुजवाण्या स्तोत्रमेतद्व भाषे॥ १॥

अर्थात् संवत् १९४५ वैशाखकृष्णपक्ष अष्टमी तिथि गुरुवारके दिन शुभ भारतभूमिमंडल प्रसिद्ध इन्द्रप्रस्थनगरसे पश्चिमकोणस्थ आचर्चिशैलतलवर्ति नंदग्रामनिवासी, श्रीमद्वृद्धसमृद्ध शुक्लजी श्रीईश्वरीसहायजी, उनके सत्पुत्रवर पंडित गंगासहायजी याजकेश, उनके लघुभाई पं० देवीसहाय चिरंजीव बदरीप्रसाद युगलआदि बालकोंके विनोदार्थ त विद्वज्जनोंके मनोरंजनार्थ इस स्तोत्रको मनुष्यभाषासे विभूषि किया, सो सबको सदा सुखसंपत्ति देवे ॥ १ ॥

॥ श्रीरस्तु मंगल भवतु ॥

Printed by V. B. Paranjpe, at the Native Opinion Press, Angre's Wadi, Girgaon, Bombay.

Published by Vrajavalabha Hariprasad, House No 331 Kalkadevi Road, Bombay.

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri